ना समझ

डा0 वसीम सिद्दीक़ी
10/8th Road North
Ahmadi - 61008
Kuwait

दूसरों की बात कान लगा कर सुनना बुरी बात है। ये बात विजय को अच्छी तरह मालूम थी। लेकिन जब टेली फोन बूथ के बाहर अपनी बारी का इन्तिज़ार करते करते उस ने किसी आदमी को फोन पर ये कहते हुये सुना कि समझने की कोशिश करा मेरी जान, तो वो चौंक गया। ये किसी लड़की को कुछ समझा रहा है। क्या समझा रहा है, उसने कान लगा दिये। टेलीफोन बूथ का दरवाज़ा भी टूट कर गायब हो चुका था, इस लिये उसे बात सुनने में कोई परेशानी नहीं हो रही थी।

देखो कार्ट में इतनी जल्दी शादी नहीं हो सकती, उस में दो तीन महीने लग सकते हैं। क्या कहा तुम दो तीन महीने इन्तिज़ार कर लोगी।

नहीं नहीं मुझ से अब इन्तिज़ार नहीं होता। कल मुझे 10 बजे बस स्टैण्ड पर मिलो। वहाँ रहने की अच्छी जगह है। सब से पहले मन्दिर चल कर एक दूसरे को माला डाल कर पति पत्नी मान लेंगे।

अरे, ऐसे शादी हो जाती है।

रहने की कोई प्राब्लम नहीं। मैं ने राजगढ़ में एक कमरा किराये पर लिया हुआ है। फिर वही ज़िद। डर की क्या बात है। मैं तुम्हारे साथ हूँ तो। नहीं आओगी तो पछताओगी।

हाँ अब तुम समझदार लड़की की तरह बात कर रही हो।

नहीं सामान लेने की कोई ज़रूरत नहीं, बस अपने ज़ेवर ले लेना, शादी में पहनने के लिये।

क्या कहा..... कुछ ज़ेवर तो होंगे।?

तुम्हें अपने बाबूजी का बहुत ख़्याल आ रहा है। अरे पगली..... कोई हमेशा तो घर भाग नहीं रही हो। शादी के बाद आकर उन से मिल लेंगे।

अच्छा ठीक है। कल दस बजे बस स्टैण्ड पर मिलते हैं।

उसने फोन रख दिया और सड़क की दूसरी तरफ जाने लगा।

विजय को कहाँ फोन करना था, अब उसे बात का ख़्याल नहीं रहा। वह अब माइकल के घर जा रहा था। ये आदमी ठीक नही लगता। शादी का झांसा देकर उस लड़की को भगा रहा है। राजगढ़ टूरेस्ट पैलेस है और बदनाम जगह भी।

इस तरह के बहुत से वाक़यात सुनने में आये कि दूर दराज़ के इलाक़ों से लडकियों को अगवा करके राजगढ़ में बेच दिया जाता है। इस तरह का माफ़िया वहा बहुत सरगर्म है।

माइकल उसके महेल्ले में ही रहता है। बहुत लम्बा चौड़ा, दाद क़िस्म का आदमी। छोटी मोटी गुन्डा गीरी किया करता था जो सिर्फ मार पीट तक थी।

अक्सर उसने विजय से भी कहा कि कोई काम हो तो बता देना। दूसरे दिन वो मइकल को लेकर बस स्टैण्ड पर पहुँच गया था। उस ने उस आदमी को लड़की से बात करते हुये सुना था कि

दस बजे बस स्टैण्ड पर मिलो।

विजय और माइकल बस स्टैण्ड के बाहर फाटक के पास खडे हो गये थे। और हर आने वाले को बहुत गौर से देख रहे थे। लोग रिक्शा, तांगा और आटो से उतरकर बस स्टैण्ड के अन्दर दाखिल हो रहे थे।

थोड़ी देर में एक अच्छी खासी शकल-व-सूरत की लड़की रिक्शे से उतरी। उस ने हाथ में एक छोटा सा बैग था। और वह कुछ घबराई हुई सी लग रही थी। लड़की ने जल्दी से रिक्शे वाले को पैसे दिये और बस स्टैण्ड के अन्दर चली गई।

यही लड़की लगती है..... अकेली है और घबराई हुई भी.....

विजय ने माइकल से कहा। तब ही वो फोन वाला आदमी उन्हे आता हुआ दिखाई दिया। अब वह बस स्टैण्ड के गेट की तरफ जा रहा था। विजय ने माइकल को उसे दिखा दिया। माइकल ने उस आदमी को बुलाया, ज़रा एक मिनट सुनो, वह आदमी पलट कर माइकल को देख रहा था। ज़रा किनारे आओ तुम से एक ज़रूरी बात करनी है।

अब माइकल उस आदमी को लेकर बस स्टैण्ड से थोड़ी दूर चला गया था।

क्या ज़रूरी बात करनी है।

तुम ने मुझे कल गाली क्यो दी थी।?

माइकल ने उस आदमी का गरेबान पकड़ लिया था।

नहीं मैं ने तो कुछ नहीं कहा, मैं तो तुम को जानता भी नहीं।

धर पर धड़ माइकल के मोटे मोटे हाथों के घूंसे उस आदमी के मुंह पर पड़ रहे थे।

फिर माइकल ने उस का हाथ मरोड़ का उसे पटखनी लगा दी। वह दर्द की शिद्दत से चीखा था। शायद हाथ भी टूट गया था।

ये सब दो चार मिनट में हो गया।

अब माइकल वहाँ से तेज़ी से चला गया था। किसी को उस का पीछा करने की हिम्मत नहीं पड़ी।

वह आदमी ज़मीन पर पड़ा दर्द की शिद्दत से चिल्ला रहा था और उस का मुह भी खून से लहूलुहान था।

अरे इस को अस्पताल पहुचाओं, कोई कह रहा था।

दो लोगों ने उसे एक रिक्शे पर लादा था और पास से एक सिविल अस्पताल में ले गये।

विजय अब बस स्टैण्ड के अन्दर दाखिल हो रहा था। वह लड़की उसे एक कोने में खड़ी नज़र आ गई। काफी बेचेन लग रही थी। विजय उसके पास पहुँचा था। वह आदमी जो आप को भगा कर राजगढ़ जा रहा था अब नहीं आयेगा।

जी क्या मतलब? वह घबरागई।

वह आदमी जो इस तरह आप को भगा कर ले जाये वह कोई अच्छा आमदी हो सकता है। वह

आप को राजगढ़ ले जाकर किसी कोठे पर बेच देता।

क्या आप पागल हैं।? आप को बिलकुल अक़्ल नहीं। इस तरह घर से भाग रही हैं। क्या आप को अपने माँ बाप का ख़याल नहीं आया कि उन पर क्या बीतेगी। अब वह आदमी नहीं आयेगा। महीनों अस्पताल में पड़ा रहेगा। उसके बाद पुलिस उस को ले जायेगी।

जाइये अपने घर जाइये। विजय ने उससे कहा था। वह लड़की फफक फफक कर रोने लगी। या भगवान ये मैंने क्या किया। जो भी क्या अब उसे भूल जाओ और अपने घर वापस जाओ।

किस मुह से घर वापस जाओंगी। वहाँ तो मैं पर्चा लिख कर भी छोड़ आई, कि घर से भाग रही हों। वह फिर रोने लगी।

पता नहीं मेरे माँ बाप मेरे साथ क्या सुलूक करेंगे।

सुलूक क्या करेंगे। आप को दो चार डन्डे या दो चार जूतियाँ पड़ेंगी जो आप के लिये ज़रूरी हैं। उसके बाद अपने घर आराम से रहइयेगा।

विजय उस लड़की को लेकर बस स्टैण्ड से बाहर आ गया था और एक रिक्शा वाले को आवाज़ दी थी। जाइये रिक्शा खड़ा है। अपने घर जाइये।

वह लड़की रिक्शे पर बैठ गयी थी। विजय सोचने लगा, अगर ये लड़की आने घर नहीं गई तो क्या होगा। कहीं नदी वगैरा में फाँद न जाये। रिक्शे जाने ही वाला था कि उस ने रिक्शे को रोका।

चलो मैं तुम्हे घर तक छोड़ दूँ।

लड़की रिक्शे पर खिसक कर बैठ गयी थी। वह रिक्शे पर बैठ गया।

लड़की अब भी सिसकियाँ ले रही थी। विजय ने कहा इतनी बड़ी गलती करने जा रही थी, जो तुम्हारी ज़िन्दगी तबाह कर देती। तुम्हारे माँ बाप तो तुम्हारी पिटाई करेंगे ही। जी चाह रहा है मैं भी तुम को एक झांपड़ रसीद कर दूँ।

जी मुझे जी झांपड़ मार दीजिये। मैं इसी लायक़ हूँ। वह फिर फफक पड़ी। और विजय ने झांपड़ मारने के बजाय सिर्फ अपने रूमाल से उसके आँसू पोछे थे और फिर अपना रूमाल भी उस को दे दिया कि रख ले। जब घर में पिटाई होगी तो आँसू पोछने के काम आयेगा।

लड़की का घर आ गया था। वह उतर कर अपने घर में दाखिल हो गई थी। और विजय विजय रिक्शा मुड़वाकर वापस आ गया था।

------0------0--------

आज विजय की शादी की पच्चीसवीं सालगिरह थी। शादी की सिलवर जुबली उसकी बेटी निशी अपने दोनों बेटों के साथ अपने ससुराल से आई हुई थी माँ बाप की शादी की सालगरह में शिर्कत करने के लिये। उसका बेटा भी आया हुआ था। पुलिस आफ़िसर पिछले साल ही वह आई0 पी0 एस0 में आया था। और आज कल उसकी ट्रेनिंग चल रही थी। काफी धूम धाम से सालगिरह की तैयारियाँ चल रहीं थी।

अभी सुबह का वक़्त था, वह कमरें में बैठा अख़बार पढ़ रहा था, तब ही उसकी बीवी संगीता कमरे में दाखिल हुई। देखिये अब अख़बार रख दीजिये और कमरे से बाहर निकलये।

ठीक है उठ रहा हूँ। बस एक पियाली चाय और पिला दो। या भगवान सारे दिन उन को चाय ही पिलाते रहेंगे तो काम कब होगा। सुबह से ये चौथी चाय की प्याली होगी। और फिर वह चाय बनाने के लिये चली गई।

विजय सोचने लगा। आज उस की शादी के पच्चीस साल हो गये। और उन पच्चीस सालों में संगीता ने कितनी अच्छी तरह से घर चलाया। आज रूपये की फरावानी है, लेकिन मुलाज़मत के शुरू के ज़माने में इस क़दर माली तंगी रहती थी कि संगीता को कभी कुछ रूपये जब खर्च के नाम पर भी फिर भी कभी नहीं दे सके। लेकिन संगीता उन चीज़ों से बिलकुल बेनियाज़ रही। घर की सारी ज़िम्मेदारिया निभाई और हमेशा उस को हौसला देती रही।

लीजिये चाय। संगीता चाय ले आई थी। और उसके ख़्यालों का सिलसिला टूट गया। उसने अख़बार रख दिया था और संगीता की आखों में झांकने लगा। एक शरीर मुस्कुराहट के साथ।

ऐसे क्यो देख रहे हो।

संगीता मैं पिछले पच्चीस सालों से एक सवाल पूछना चाह रहा हूँ और हमेशा भूल जाता हूँ। इस वक़्त पूछ ही लेता हूँ

जी पूछये.....

संगीता उसे माने खेज़ निगाहों से देख रही थी।

ये बताओ, जब मैं ने उस वक़्त तुम्हे बस स्टैण्ड से रिक्शे पर तुम्हारे घर छोड़ा था तो घर पर तुम्हारी पिटाई हुई थी कि नहीं?

संगीता उसे थोड़ी देर तक देखती रही, फिर ज़ोर से हंस दी थी, फिर बोली.....

हाँ बहुत ज़ोर की पिटाई हुई थी, बाबू जी तो तीन चार रोज़ नहीं बाले थे, हाँ माँ ने ज़रूर बहुत सारी जूतियां मेरे ऊपर चटका दी थीं।

विजय बहुत ज़ोर से हंसा था।

★★★